

STARZ SPEAK

श्री ब्रह्म चालीसा

॥ दोहा ॥

जय ब्रह्मा जय स्वयम्भू,
चतुरानन मुखमूल।

करहु कृपा निज दास पै,
रहहु सदा अनुकूल।

तुम सृजक ब्रह्माण्ड के,
अज विधि घाता नाम।

विश्वविधाता कीजिये,
जन पै कृपा ललाम।

॥ चौपाई ॥

जय जय कमलासान जगमूला,
रहहु सदा जनपै अनुकूला।

रूप चतुर्भुज परम सुहावन,
तुम्हें अहैं चतुर्दिक आनन।

रक्तवर्ण तव सुभग शरीरा,
मस्तक जटाजुट गंभीरा।

ताके ऊपट मुकुट विराजै,
दाढ़ी श्वेत महाछवि छाजै।

श्वेतवस्त्र धारे तुम सुन्दर,
है यज्ञोपवीत अति मनहर।

कानन कुण्डल सुभग विराजहिं,
गल मोतिन की माला राजहिं।

चारिहु वेद तुम्हीं प्रगटाये,
दिव्य ज्ञान त्रिभुवनहिं सिखाये।

ब्रह्मलोक शुभ धाम तुम्हारा,
अखिल भुवन महैं यश विस्तारा।

श्री ब्रह्म चालीसा

॥ चौपाई ॥

अद्वागिनि तव है सावित्री,
अपर नाम हिये गायत्री।

पुनि बिचार मन महँ यह कीन्हा
महापघ यह अति प्राचीन।

सरस्वती तब सुता मनोहर,
वीणा वादिनि सब विधि मुन्दर।

याको जन्म भयो को कारन,
तबहीं मोहि करयो यह धारन।

कमलासन पर रहे विराजे,
तुम हरिभक्ति साज सब साजे।

अखिल भुवन महँ कहँ कोई नाहीं,
सब कुछ अहै निहित मो माहीं।

क्षीर सिन्धु सोवत सुरभूपा,
नाभि कमल भो प्रगट अनूपा।

यह निश्चय करि गरब बढ़ायो,
निज कहँ ब्रह्म मानि सुख पाये।

तेहि पर तुम आसीन कृपाला,
सदा करहु सन्तन प्रतिपाला।

गगन गिरा तब भई गंभीरा,
ब्रह्मा वचन सुनहु धरि धीरा।

एक बार की कथा प्रचारी,
तुम कहँ मोह भयेउ मन भारी।

सकल सृष्टि कर स्वामी जोई,
ब्रह्म अनादि अलख है सोई।

कमलासन लखि कीन्ह बिचारा,
और न कोउ अहै संसारा।

निज इच्छा इन सब निरमाये,
ब्रह्मा विष्णु महेश बनाये।

तब तुम कमलनाल गहि लीन्हा,
अन्त विलोकन कर प्रण कीन्हा।

सृष्टि लागि प्रगटे त्रयदेवा,
सब जग इनकी करिहै सेवा।

कोटिक वर्ष गये यहि भांती,
भ्रमत भ्रमत बीते दिन राती।

महापघ जो तुम्हरो आसन,
ता पै अहै विष्णु को शासन।

पै तुम ताकर अन्त न पाये,
है निराश अतिशय दुःखियाये।

विष्णु नाभितें प्रगट्यो आई,
तुम कहँ सत्य दीन्ह समुझाई।

STARZ SPEAK

श्री ब्रह्म चालीसा

॥ चौपाई ॥

भैतहू जाई विष्णु हितमानी,
यह कहि बन्द भई नभवानी।

ताहि श्रवण कहि अचरज माना,
पुनि चतुरानन कीन्ह पयाना।

कमल नाल धरि नीचे आवा,
तहां विष्णु के दर्शन पावा।

शयन करत देखे सुरभूपा,
श्यायमवर्ण तनु परम अनूपा।

सोहत चतुर्भुजा अतिसुन्दर,
क्रीटमुकट राजत मस्तक पर।

गल बैजन्ती माल विराजै,
कोटि सूर्य की शोभा लाजै।

शंख चक्र अरु गदा मनोहर,
पध नाग शय्या अति मनहर।

दिव्यरूप लखि कीन्ह प्रणामू,
हर्षित भे श्रीपति मुख धामू।

बहु विधि विनय कीन्ह चतुरानन,
तब लक्ष्मी पति कहेउ मुदित मन।

ब्रह्मा दूरि करहु अभिमाना,
ब्रह्मारूप हम दोउ समाना।

तीजे श्री शिवशंकर आहीं,
ब्रह्मरूप सब त्रिभुवन मांहीं।

तुम सों होई सृष्टि विस्तारा,
हम पालन करिहैं संसारा।

शिव संहार करहिं सब केरा,
हम तीनहुं कहैं काज घनेरा।

अगुणरूप श्री ब्रह्मा बखानहु,
निराकार तिनकहैं तुम जानहु।

हम साकार रूप त्रयदेवा,
करिहैं सदा ब्रह्म की सेवा।

यह मुनि ब्रह्मा परम सिहाये,
परब्रह्म के यश अति गाये।

सो सब विदित वेद के नामा,
मुक्ति रूप सो परम ललामा।

यहि विधि प्रभु भो जनम तुम्हारा,
पुनि तुम प्रगट कीन्ह संसारा।

नाम पितामह सुन्दर पायेउ,
जइ चेतन सब कहैं निरमायेउ।

लीन्ह अनेक बार अवतारा,
सुन्दर सुयश जगत विस्तारा।

STARZ SPEAK

श्री ब्रह्म चालीसा

॥ चौपाई ॥

देवदनुज सब तुम कहँ ध्यावहिं,
मनवांछित तुम मन सब पावहिं।

जो कोउ ध्यान धरै नर नारी,
ताकी आस पुजावहु साटी।

पुष्कर तीर्थ परम मुखदाई,
तहँ तुम बसहु सदा सुरदाई।

कुण्ड नहाइ करहि जो पूजन,
ता कर दूर होई सब दूषण।
॥ इति श्री ब्रह्मा चालीसा ॥